

## वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर) के दौरान भारत के भुगतान संतुलन की गतिविधियां\*

भारतीय रिज़र्व बैंक भारत के भुगतान-संतुलन संबंधी आंकड़ों का समेकन और प्रकाशन एक तिमाही के अंतर से तिमाही रूप से करता है। इस लेख में (i) 2012-13 की तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर) तथा (ii) अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान भारत के भुगतान संतुलन की प्रमुख गतिविधियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

### 1. वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर) के दौरान भारत के भुगतान संतुलन

#### मुख्य बातें

- जीडीपी के प्रतिशत के रूप में भारत का चालू खाता (सीएडी) 2012-13 की तीसरी तिमाही में और बढ़ कर 6.7 प्रतिशत के अब तक के सबसे उच्च स्तर पर पहुंच गया। इसका कारण उच्चतर व्यापार घाटा तथा निवल अमूर्त व्यापार में गिरावट होना था। जीडीपी से सीएडी अनुपात में वृद्धि आंशिक रूप से जीडीपी में धीमी वृद्धि तथा रुपये के मूल्य में गिरावट की वजह से हुई।
- भुगतान संतुलन आधार पर, 2012-13 की तीसरी तिमाही में पण्य निर्यात में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई, लेकिन तेल और स्वर्ण के आयात में तेजी के कारण आयातों में 9.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसकी वजह से तिमाही के दौरान व्यापार घाटा 59.6 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया।
- निवल सेवाओं में धीमी वृद्धि तथा आय खाते में से तेज निकासी के कारण निवल अमूर्त आय में कमी हुई तथा इससे व्यापार घाटे के छोटे से भाग का ही वित्तपोषण किया जा सका।

\* भारिबैं के आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वित्त प्रभाग में तैयार किया गया। भुगतान संतुलन पर टाइम सीरीज़ आंकड़े भारिबैं की साइट [dbie.rbi.org.in](http://dbie.rbi.org.in) पर उपलब्ध हैं इसके अलावा, अमूर्त व्यापार से संबंधित तिमाही आंकड़े भारिबैं की साइट पर अलग से 14 मई 2013 को जारी किए गए हैं।

- लेकिन, तिमाही के दौरान निवल पूंजी आगमन में तेजी से सीएडी का पूरा वित्तपोषण किया जा सका और भुगतान संतुलन के आधार पर विदेशी मुद्रा की आरक्षित निधियों में 0.8 बिलियन की वृद्धि हुई। पूंजी प्रवाह में तेजी मुख्यतः इस अवधि में विदेशी संविभाग निवेशों के रूप में तथा बैंकों और कंपनी क्षेत्र द्वारा लिए गए ऋणों के कारण आई।
- जुलाई-सितंबर 2012 के दौरान भारत के भुगतान संतुलन में देखे गए दबाव में 2012-13 की तीसरी तिमाही में और वृद्धि हुई और चालू खाता घाटा अब तक के अपने सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गया। लेकिन, विदेशी संविभाग निवेश तथा बैंकों और भारतीय कंपनियों द्वारा लिये गए ऋणों में वृद्धि के कारण पूंजी आगमन में हुए

सारणी 1 : भारत के भुगतान संतुलन की प्रमुख मंटे

(बिलियन अमरीकी डालर)

	तीसरी तिमाही अक्टूबर-दिसंबर		अप्रैल-दिसंबर	
	2011 (आंसं)	2012 (प्रा)	2011-12 (आंसं)	2012-13 (प्रा)
1. वस्तु निर्यात	71.5	71.8	229.8	218.4
2. वस्तु आयात	120.1	131.4	367.8	368.7
3. व्यापार संतुलन (1-2)	-48.6	-59.6	-138.0	-150.3
4. सेवा निर्यात	37.3	36.5	103.3	105.8
5. सेवा आयात	21.1	18.9	56.9	59.0
6. निवल सेवाएं (4-5)	16.1	17.6	46.4	46.9
7. वस्तु और सेवा शेष (3+6)	-32.5	-42.0	-91.6	-103.5
8. प्राथमिक आय, निवल (कर्मचारियों की क्षतिपूर्ति तथा निवेश आय)	-3.8	-6.3	-11.4	-16.8
9. गौण आय, निवल (निजी अंतरण)	16.2	15.7	46.6	48.6
10. निवल आय (8+9)	12.4	9.4	35.2	31.8
11. चालू खाता शेष (7+10)	-20.2	-32.6	-56.5	-71.7
12. पूंजी और वित्तीय खाता शेष, निवल (आरक्षित निधियों में परिवर्तन घटा कर)	7.9	31.8	51.3	71.4
13. आरक्षित निधियों में परिवर्तन (-) वृद्धि/(+)कमी	12.8	-0.8	7.1	-1.1
14. भूल-चूक (-) (11+12+13)	-0.5	1.6	-1.9	1.5
मेमो मंटे				
तेल आयात	35.3	43.7	111.0	124.5
स्वर्ण आयात	12.8	17.8	41.7	38.0
गैर-तेल गैर-स्वर्ण आयात	72.2	67.8	211.1	200.8

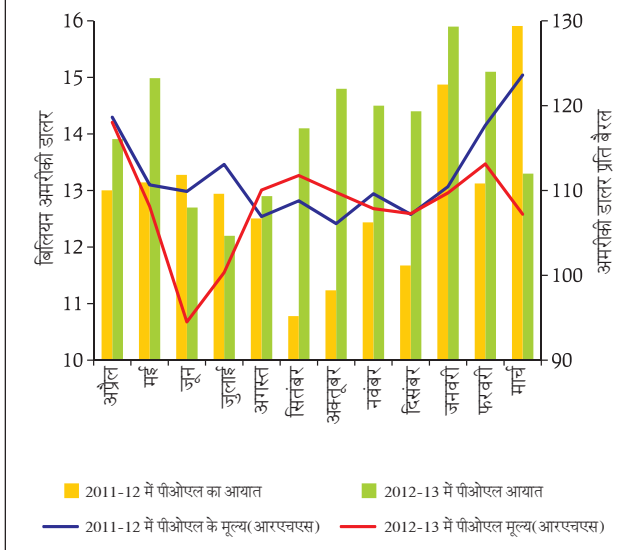
प्रा: प्राथमिक; आंसं: आंशिक संशोधित

सुधार से तिमाही के दौरान चालू खाता घाटे का पूर्ण वित्तपोषण किया जा सका तथा विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों में भी सीमांत वृद्धि हुई. वर्ष 2011-12 की तीसरी तिमाही में भुगतान संतुलन की प्रमुख मदों में हुई गतिविधियों को नीचे सारणी 1 में दर्शाया गया है.

### वस्तु व्यापार

- भुगतान संतुलन आधार पर, पण्य निर्यात में 2011-12 की तीसरी तिमाही के 7.6 प्रतिशत के मुकाबले 2012-13 की तीसरी तिमाही में 0.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई. आयातों में स्थिरता विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं सहित काफी देशों में व्याप्त आर्थिक गिरावट से वैश्विक मांग में हुई कमी की निरंतरता को प्रतिबिंबित करती है. पिछले वर्षों में निर्यात विविधीकरण का केंद्र रही लेटिन अमरीका, अफ्रीका और एशिया की अर्थव्यवस्थाओं में चालू तिमाही में तीव्र गिरावट आयी.
- यूरोपीय संघ को निर्यातों में 1.6 प्रतिशत की कमी आयी. पिछले वर्ष में उन्नत देशों से कम मांग की भरपाई करने वाले विकासशील देशों को निर्यातों में भी कमी आयी और यह 2011-12 की तीसरी तिमाही के 12.7 प्रतिशत से घट कर 2012-13 की तीसरी तिमाही में 2.4 प्रतिशत पर आ गई. एशियाई विकासशील देशों को निर्यात में भी 4.9 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई जो चीन के मामले में अधिक (34.2) मुखर थी.
- यद्यपि, घरेलू आर्थिक गतिविधि के धीमेपन से आयात मांग में कमी आई, तथापि पेट्रोल, तेल और चिकनाई की लोचहीन मांग ने तिमाही के दौरान पण्य निर्यातों के मुकाबले पण्य आयातों की समग्र वृद्धि में अपेक्षाकृत अधिक योगदान दिया. भुगतान संतुलन आधार पर, तीसरी तिमाही के दौरान पण्य आयात पिछले वर्ष की तदनुरूपी अवधि से 9.4 प्रतिशत बढ़ कर 131.4 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गए. आयातों में वृद्धि मुख्यतः तेल और स्वर्ण के आयात में वृद्धि के कारण हुई जो वर्ष-दर-वर्ष आधार पर क्रमशः लगभग 24 और 39 प्रतिशत की थी. लेकिन, आयातों के “गैर-तेल गैर-स्वर्ण” घटक में 6.1 प्रतिशत की गिरावट हुई और यह 67.8 बिलियन हो गया जबकि पिछले वर्ष की तीसरी तिमाही में इसमें 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी (सारणी 1).

चार्ट 1 : भारत के पेट्रोल, तेल तथा चिकनाई पदार्थ के आयात तथा कच्चे तेल के अंतर्राष्ट्रीय मूल्य



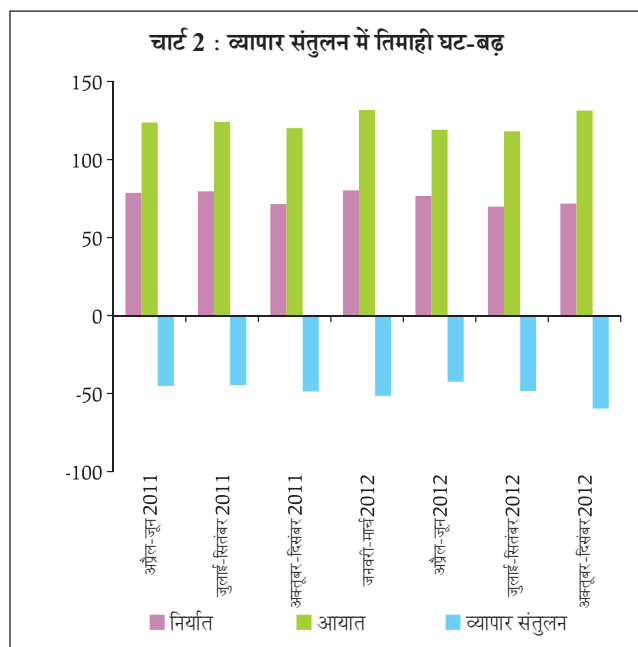
- हाल की अवधि में स्वर्ण के आयातों में हुई अभूतपूर्व वृद्धि वैश्विक अर्थव्यवस्था में व्याप्त अनिश्चितता के कारण हुई जिससे निवेशकों ने सुरक्षित निवेश अवसर के रूप में स्वर्ण में निवेश को अपनाया. मात्रा के साथ-साथ आयात मूल्य में हुई वृद्धि के परिणामस्वरूप स्वर्ण के आयातों में वृद्धि हुई. उक्त तिमाही में स्वर्ण का औसत अंतर्राष्ट्रीय मूल्य 1722 अमरीकी डालर प्रति ट्राय औंस रहा जो पिछले वर्ष के मुकाबले सीमांत रूप से अधिक था.
- उक्त तिमाही के दौरान आयातों में हुई तीव्र वृद्धि इंडियन बॉस्केट के लिए अंतर्राष्ट्रीय कच्चे तेल की मात्रा तथा मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है. पिछली तिमाही की इसी अवधि के मूल्य स्तर से इस तिमाही में मूल्य सीमांत रूप से ही अधिक थे (चार्ट 1).

### व्यापार घाटा

- निर्यात में सीमांत वृद्धि के साथ आयातों में हुई तेज वृद्धि के कारण व्यापार घाटा 2011-12 की तीसरी तिमाही के 48.6 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले बढ़ कर 2012-13 की तीसरी तिमाही में 59.6 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया, जो वर्ष-दर-वर्ष आधार पर लगभग 22.5 की वृद्धि दर्शाता है.

### सेवाएं

उक्त तमाही के दौरान निवल सेवा प्राप्तियां 17.6 बिलियन अमरीकी डालर रहीं जो पिछले वर्ष की इसी तमाही



के मुकाबले 9.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती हैं (सारणी 2)। हालांकि पिछले वर्ष के मुकाबले उक्त तिमाही के दौरान आयात और निर्यात दोनों में ही वृद्धि हुई, तथापि निवल रूप में हुई वृद्धि सेवाओं के निर्यात के मुकाबले आयातों में हुई तीव्र कमी के कारण हुई।

- वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में सेवा निर्यातों की संवृद्धि में 2.0 प्रतिशत (36.5 बिलियन अमरीकी डालर) की कमी आई जबकि वर्ष 2011-12 की इसी अवधि में इसमें 6.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। ऐसा परिवहन, यात्रा, बीमा और पेंशन, सॉफ्टवेयर सेवाओं के अंतर्गत प्राप्तियों में कम वृद्धि होने तथा वित्तीय और दूरसंचार सेवाओं से प्राप्तियों में कमी होने के कारण हुआ।
- सेवा आयातों में वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में 10.6 प्रतिशत की कमी हुई जबकि 2011-12 की इसी अवधि में 8.9 प्रतिशत की कमी हुई थी। ऐसा मुख्यतः यात्रा, परिवहन, वित्तीय सेवाओं तथा अन्य व्यावसायिक सेवाओं की प्राप्तियों में गिरावट के कारण हुआ।

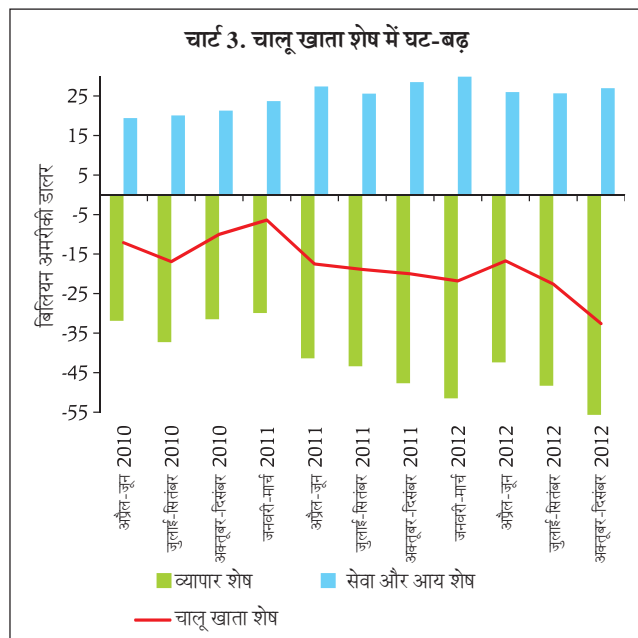
### आय

प्राथमिक आय के कारण निवल बहिर्वाह तीसरी तिमाही में जारी रहा जो विदेशी ऋणों पर ब्याज की अदायगियों में वृद्धि की प्रवृत्ति दर्शाता है। निवल गौण आय भी 2012-13 की तीसरी तिमाही में व्यक्तिगत विप्रेषणों में कमी के साथ पिछले वर्ष की तदनुसूची अवधि की तुलना में सीमांत रूप से कम रही (सारणी 2)।

सारणी 2 : चालू खाते की विभिन्न मदें

(बिलियन अमरीकी डालर)

	अक्टूबर-दिसंबर		अप्रैल-दिसंबर	
	2012 (प्रा)	2011 (आंस)	2012 (प्रा)	2011 (आंस)
<b>1. वस्तुएं</b>	<b>-59.6</b>	<b>-48.6</b>	<b>-150.3</b>	<b>-138.0</b>
<b>2. सेवाएं</b>	<b>17.6</b>	<b>16.1</b>	<b>46.9</b>	<b>46.4</b>
2.क. परिवहन	0.6	0.3	1.5	1.4
2.ख. यात्रा	2.0	1.5	3.4	2.5
2.ग. निर्माण	-0.0	0.0	-0.0	-0.1
2.घ. बीमा और पेंशन सेवाएं	-0.0	0.4	0.5	0.8
2.ङ. वित्तीय सेवाएं	0.5	-0.6	0.6	-1.6
2.च. बौद्धिक संपदा के उपयोग के प्रभार	-1.0	-0.8	-2.8	-2.0
2.छ. दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाएं	16.0	15.8	47.0	44.0
2.ज. व्यक्तिगत सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवाएं	0.1	0.0	0.2	0.1
2.झ. सरकारी वस्तुएं और सेवाएं आदि	-0.0	-0.0	-0.0	-0.1
2.ञ. अन्य व्यावसायिक सेवाएं	-0.8	-0.2	-1.0	-0.7
2.ट. अन्य	0.2	-0.3	-2.3	2.1
<b>3. प्राथमिक आय</b>	<b>-6.3</b>	<b>-3.8</b>	<b>-16.8</b>	<b>-11.4</b>
3.क. कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति	0.2	0.0	0.7	0.5
3.ख. निवेश आय	-6.7	-3.9	-17.8	-12.2
<b>4. गौण आय</b>	<b>15.7</b>	<b>16.2</b>	<b>48.6</b>	<b>46.6</b>
4.क. व्यक्तिगत अंतरण	14.8	15.6	46.5	45.0
4.ख. अन्य अंतरण	0.6	0.6	1.8	1.6
<b>5. चालू खाता (1+2+3+4)</b>	<b>-32.6</b>	<b>-20.2</b>	<b>-71.7</b>	<b>-56.5</b>



- वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही के दौरान भुगतानों में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यह वृद्धि निवेश आय के कारण हुई जिसमें मुख्यतः बाह्य वाणिज्यिक उधारों पर ब्याज भुगतान, अनिवासी जमाराशियां तथा भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कंपनियों के लाभ और पुनर्निवेशित आय शामिल हैं। इसके विपरीत, मुख्यतः विदेशी करेंसी आस्तियों पर अर्जित आय प्राप्तियों में 2012-13 की तीसरी तिमाही के दौरान 2.4 प्रतिशत की कमी आई। इस प्रकार, 2012-13 की तीसरी तिमाही में 6.3 बिलियन अमरीकी डालर की प्राथमिक आय के कारण निवल बहिर्गमन 2011-12 की तीसरी तिमाही के (3.8 बिलियन अमरीकी डालर) के मुकाबले उल्लेखनीय रूप से अधिक थे।
- विदेशों में रहने वाले भारतीयों के विप्रेषण को प्रतिबिंबित करने वाली गौण आय (निवल आधार पर) 15.7 बिलियन अमरीकी डालर रही जो 2011-12 की तीसरी तिमाही में हुई 20.6 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले 3.4 प्रतिशत की सीमांत गिरावट दर्शाती है।

### चालू खाता

आय खाते में (प्राथमिक और गौण) कम निवल अगमन के साथ निवल सेवा प्राप्तियों में कमी के परिणामस्वरूप निवल अमूर्त प्राप्तियों में गिरावट आई जिससे व्यापार घाटा बढ़ने के साथ-साथ चालू खाते का घाटा अपने अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में

चालू खाता घाटे में 32.6 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि हुई जबकि इससे पिछली तिमाही में 22.6 बिलियन अमरीकी डालर की तथा 2011-12 की तीसरी तिमाही में 20.2 बिलियन अमरीकी डालर की ही वृद्धि हुई थी। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में चालू खाता घाटा 2011-12 की तीसरी तिमाही के 4.4 प्रतिशत की तुलना में 2012-13 की दूसरी तिमाही में 5.4 प्रतिशत तथा तीसरी तिमाही में 6.7 प्रतिशत पर पहुंच गया।

### पूँजीगत और वित्तीय खाता

#### पूँजीगत खाता

पूँजी खाते में 2012-13 की तीसरी तिमाही में निवल आधार पर नगण्य अंतर्वाह दिखाई दिया, जिसमें अन्य के साथ-साथ “गैर-उत्पादित गैर-वित्तीय आस्तियों का निवल अभिग्रहण” तथा “प्रवासी अंतरणों सहित अन्य पूँजीगत प्राप्तियां” शामिल हैं।

#### वित्तीय खाता

आरक्षित निधियों में परिवर्तन को शामिल न करते हुए वित्तीय खाते में निवल अंतर्वाह में 2012-13 की तीसरी तिमाही के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह वृद्धि बैंकिंग पूँजी और बाह्य वाणिज्यिक उधारों में वृद्धि तथा विदेशी संस्थागत निवेशों और व्यापारिक जमा में तीव्र वृद्धि के कारण हुई (सारणी 3)। उक्त तिमाही के दौरान संविभाग में जो तेजी आई वह उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में आसान मौद्रिक नीति रुझान तथा घरेलू अर्थव्यवस्था में सुधार की उस संभावना के कारण आयी जो सरकार द्वारा घोषित सुधारों से उत्पन्न हुई थी। लेकिन, विदेशी सीधे निवेश में 2011-12 की तीसरी तिमाही तथा पिछली तिमाही के मुकाबले कमी आई जिससे ईक्विटी प्रवाह में भी कमी आई और 2012-13 की तीसरी तिमाही में चालू खाता घाटे के लगभग एक-तिहाई (2012-13 की दूसरी तिमाही में 70 प्रतिशत) को ही पाटा जा सका।

- वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में सकल वित्तीय अन्तर्वाह 120.8 बिलियन अमरीकी डालर रहा (एक वर्ष पहले यह 119.4 बिलियन डालर था) तथा उक्त अवधि में सकल वित्तीय बहिर्वाह कम अर्थात् 89.8 बिलियन अमरीकी डालर रहा (एक वर्ष पहले यह 98.9 बिलियन डालर था)।
- वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही के दौरान वित्तीय खाते में निवल अंतर्वाह बढ़ कर 31.1 बिलियन अमरीकी डालर हो गये (पिछले वर्ष की तीसरी तिमाही के दौरान ये

**सारणी 3 : वित्तीय खाते की विभिन्न मदें**

(बिलियन अमरीकी डालर)

	अक्टूबर-दिसंबर 2012 (प्रा)	अक्टूबर-दिसंबर 2011(आंस)	अक्टूबर-दिसंबर 2012 (प्रा)	अक्टूबर-दिसंबर 2011 (आंस)
<b>1. प्रत्यक्ष निवेश (निवल)</b>	<b>2.5</b>	<b>5.0</b>	<b>15.3</b>	<b>20.7</b>
1.क. भारत में प्रत्यक्ष निवेश	4.8	6.9	21.1	28.7
1.ख. भारत द्वारा प्रत्यक्ष निवेश	-2.3	-1.9	-5.8	-8.0
<b>2. संविभाग निवेश</b>	<b>8.6</b>	<b>1.8</b>	<b>14.2</b>	<b>2.7</b>
2.क. भारत में संविभाग निवेश	9.8	1.9	16.0	2.7
2.ख. भारत द्वारा संविभाग निवेश	-1.2	-0.0	-1.8	-0.1
<b>3. अन्य निवेश</b>	<b>21.0</b>	<b>1.0</b>	<b>43.8</b>	<b>27.8</b>
3.क. अन्य ईक्विटी (एडीआर/जीडीआर)	0.2	0.1	0.3	0.6
3.ख. करेंसी और जमाराशियां	2.6	3.2	12.5	7.5
केंद्रीय बैंक को छोड़ कर जमा स्वीकारने वाली कंपनियां (अनिवासी जमाराशियां)	2.7	3.3	12.0	7.3
3.ग. ऋण*	7.1	-7.7	14.0	16.8
3.ग.ि भारत को ऋण	7.2	-8.1	14.4	15.7
केंद्रीय बैंक को छोड़ कर जमा स्वीकार करने वाली कंपनियां	2.7	-8.7	7.6	6.7
सामान्य-सरकार (बाह्य सहायता)	1.5	1.4	2.0	2.1
अन्य क्षेत्र (बाह्य वाणिज्यिक उधार)	3.1	-0.8	4.7	6.9
3.ग.ii भारत को ऋण	-0.1	0.5	-0.4	1.1
सामान्य-सरकार (बाह्य सहायता)	-0.1	-0.0	-0.2	-0.1
अन्य क्षेत्र (बाह्य वाणिज्यिक उधार)	-0.1	0.5	-0.2	1.2
3.घ. व्यापारिक ऋण और अग्रिम	6.2	0.6	15.7	6.5
3.ङ. अन्य प्राप्य/देय खाते	5.0	4.8	1.2	-3.6
<b>4. वित्तीय व्युत्पन्न</b>	<b>-0.4</b>	<b>-</b>	<b>-1.4</b>	<b>-</b>
<b>5. आरक्षित आस्तियां</b>	<b>-0.8</b>	<b>12.8</b>	<b>-1.1</b>	<b>7.1</b>
<b>वित्तीय खाता (1+2+3+4+5)</b>	<b>31.1</b>	<b>20.6</b>	<b>70.7</b>	<b>58.3</b>

\*: बाह्य सहायता, ईसीबी तथा बैंकिंग पूंजी शामिल है.

टिप्पणी : पूर्णांकित करने के कारण जोड़ मेल नहीं खा सकते

- 20.6 बिलियन अमरीकी डालर थे). इसका मुख्य कारण निवल संविभाग अन्तर्वाह का 2011-12 की तीसरी तिमाही के 1.8 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले 2012-13 की तीसरी तिमाही में 8.6 बिलियन अमरीकी डालर हो जाना था.
- वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में बैंकों द्वारा लिए गये निवल बाह्य उधार 2.7 बिलियन अमरीकी डालर के रहे जबकि 2011-12 की तीसरी तिमाही में 8.7 बिलियन अमरीकी डालर के बहिर्वाह मुख्यतः नोस्ट्रो शेषों में कमी तथा बैंकों द्वारा अधिक विदेशी उधार लेने के कारण हुए थे.
- गैर-सरकारी तथा गैर-बैंकिंग क्षेत्र द्वारा लिये गये निवल बाह्य उधारों अर्थात् ईसीबी की स्थिति में परिवर्तन हुआ और ये 3.1 बिलियन अमरीकी डालर रहे जबकि 2011-12 की तीसरी तिमाही में मुख्यतः कम भुगतानों के कारण 0.8 बिलियन का बहिर्वाह रहा था.
- वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में “व्यापारिक ऋण और अग्रिम” के अंतर्गत 6.2 बिलियन अमरीकी डालर का निवल अंतर्वाह रहा जो पिछले वर्ष के 0.6 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले उल्लेखनीय रूप से अधिक था और व्यापारिक ऋणों द्वारा वित्तपोषित आयातों के बड़े अनुपात को प्रतिबिंबित करता है.
- लेकिन, वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में भारत को निवल अंतर्वाहों (एफडीआई अंतर्वाह में से एफडीआई बहिर्वाह घटा कर) में कमी आई और ये 2011-12 की तीसरी तिमाही के 5.0 बिलियन अमरीकी डालर से घट कर 2.5 बिलियन अमरीकी डालर रह गए.
- वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही के दौरान वाणिज्यिक बैंकों की जमाराशियों और करेंसी के अंतर्गत अंतर्वाह अर्थात् अनिवासी जमाराशियां 2.7 बिलियन अमरीकी डालर की रहीं, जबकि 2011-12 की तीसरी तिमाही के दौरान ये 3.3 बिलियन अमरीकी डालर की रहीं थीं.

वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही में उच्च चालू खाता घाटे के बावजूद विदेशी आरक्षित निधियों में पिछले वर्ष की इसी अवधि की 12.8 बिलियन अमरीकी डालर की कमी के मुकाबले 0.8 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि हुई क्योंकि उक्त तिमाही के दौरान “पूँजीगत तथा वित्तीय खाता” के अंतर्गत निवल पूँजीगत अंतर्वाहों में भी तीव्र वृद्धि हुई.

### अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान भुगतान संतुलन

#### मुख्य बातें

- अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान जीडीपी के प्रतिशत के रूप में चालू खाता घाटा पिछले साल की इसी अवधि के 4.1 प्रतिशत के मुकाबले तेजी से बढ़ कर 5.4 प्रतिशत पर पहुंच गया. इसका कारण व्यापार घाटे में वृद्धि तथा आय भुगतानों के अंतर्गत तीव्र वृद्धिनीत अमूर्त व्यापार में गिरावट होना था.
- वर्ष 2012-13 के दौरान विदेशी प्रत्यक्ष निवेशों में गिरावट के बावजूद वित्तीय खाते के अंतर्गत निवल अंतर्वाह पिछले वर्ष की इसी अवधि के 58.3 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में बढ़ कर 70.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गये. यह वृद्धि मुख्यतः विदेशी संस्थागत निवेशों, अनिवासी जमाराशियों तथा भारत को अल्पावधि ऋण मिलने में अधिक वृद्धि के कारण हुई.
- वित्तीय खाते में निवल अंतर्वाह वृद्धि (आरक्षित निधियों में परिवर्तन को छोड़कर) को प्रतिबिंबित करते हुए अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों में 1.1 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि हुई

दिसंबर 2012 से अब तक चालू वित्तीय वर्ष के दौरान भारत की व्यापार संबंधी स्थिति कमजोर बनी रही तथा व्यापार घाटा बढ़ कर 150.3 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुंच गया जो आयातों की तुलना में पण्य निर्यात में काफी कमी को प्रतिबिंबित करता है. इसके साथ ही, निवल सेवा और आय (प्राथमिक और गौण) में कमी की वजह से चालू खाता घाटा भी बढ़ा. लेकिन, वित्तीय खाते (आरक्षित निधियों में परिवर्तन को छोड़ कर) में अधिक अंतर्वाह से चालू खाते के पूर्ण घाटे को पाटने में सहायता मिली तथा अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों में 1.1 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि हुई.

- अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान भुगतान संतुलन आधार पर भारत का पण्य निर्यात 5.0 प्रतिशत घट कर 218.4

बिलियन अमरीकी डालर रहा जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान इसमें 28.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई.

- उक्त अवधि में, भुगतान संतुलन आधार पर आयात भुगतानों में 0.2 प्रतिशत की सीमांत वृद्धि हुई और यह 368.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गया, जबकि पिछले वर्ष इसमें 33.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी. अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान आयातों में आयी कमी आंशिक रूप से घरेलू मांग में कमी के साथ-साथ निर्यात से संबंधित मांग को प्रभावित करने वाली विदेशी मांग में कमी के कारण आयी.
- जैसा कि नकारात्मक या कम निर्यात वृद्धि के रूप में स्पष्ट है, भिन्न-भिन्न स्तर पर, समस्त पण्य समूहों में विदेशी मांग की कमी बनी रही. अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान हीरे-जवाहरात, पेट्रोलियम उत्पाद, इंजीनियरी सामान तथा कच्ची धातुओं और खनिजों, कपड़ा और कपड़ा उत्पाद की निर्यात वृद्धि दर में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में गिरावट आई.
- आयात क्षेत्र अर्थात् पूँजीगत माल (इलेक्ट्रॉनिक सामान, परिवहन उपकरण और मशीनों सहित), बड़ी मर्दे (ऊर्वरक, नॉन-फेरस मेटल, लोहा और अयस्क आदि सहित), निर्यात संबंधित मर्दों (मोती और कीमती पत्थर, सोना-चांदी, कोयला लुगदी और ईटें तथा रासायनिक सामान सहित) में वर्ष के दौरान काफी कमी आई.
- उक्त अवधि के दौरान, भारत के पण्य आयातों में पेट्रोल और तेल तथा स्वर्ण का हिस्सा लगभग 45 प्रतिशत (2011-12 की इसी अवधि में 42 प्रतिशत) रहा. कच्चे मूल्य के अंतर्राष्ट्रीय मूल्यों में कुछ कमी होने के बावजूद पेट्रोल और तेल का आयात उच्च स्तर पर बना रहा, हालांकि अप्रैल-दिसंबर 2012 में इसकी वृद्धि दर पिछले वर्ष की इसी अवधि की 47.6 प्रतिशत से कम अर्थात् 12.2 प्रतिशत रही. अप्रैल-दिसंबर 2012 में स्वर्ण आयात 38.0 बिलियन अमरीकी डालर का रहा जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के 46.3 प्रतिशत की वृद्धि से 8.9 प्रतिशत कम था.
- समीक्षाधीन अवधि में, गैर-तेल गैर-स्वर्ण आयातों में पिछले वर्ष की इसी अवधि के 211.1 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 4.9 प्रतिशत की गिरावट आयी और यह 200.8 बिलियन अमरीकी डालर हो गया (सारणी 1).

## व्यापार घाटा

- अप्रैल-दिसंबर 2012 में पण्य व्यापार शेष (भुगतान संतुलन आधार पर) पिछले वर्ष के 138.0 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़ कर 150.3 बिलियन अमरीकी डालर हो गया. जीडीपी के अनुपात के रूप में यह अप्रैल-दिसंबर 2011 के 10 प्रतिशत से अप्रैल-दिसंबर 2012 में बढ़ कर 11.2 प्रतिशत हो गया.

## सेवाएं

जबकि सेवा निर्यातों में पिछले वर्ष की 15.6 प्रतिशत वृद्धि दर के मुकाबले अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान 2.4 प्रतिशत की सीमांत वृद्धि हुई, वहीं सेवाओं के आयात में इसी अवधि की 4.7 प्रतिशत की गिरावट के मुकाबले 3.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई. इसके परिणामस्वरूप, उक्त अवधि में निवल सेवा प्राप्य राशियों में 1.0 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई.

- सेवा प्राप्तियों की संवृद्धि में कमी का मुख्य कारण यात्रा, परिवहन, बीमा और पेंशन सेवा तथा वित्तीय सेवाओं से आय में कमी तथा दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाओं की संवृद्धि में कमी होना था.
- अप्रैल-दिसंबर 2012 में सेवा भुगतानों में वृद्धि रॉयल्टी, दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवा, अनुसंधान और विकास सेवा, पेशेवर और प्रबंध परामर्श सेवा, तकनीकी, व्यापार संबंधी तथा अन्य व्यावसायिक सेवा तथा व्यक्तिगत, सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवा के भुगतानों में वृद्धि के कारण हुई. दूसरी ओर, यात्रा, बीमा और पेंशन सेवा तथा वित्तीय सेवाओं के कारण सेवा भुगतानों में कम वृद्धि दर्ज हुई.

## आय

### प्राथमिक आय

कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति तथा निवेश आय वाले प्राथमिक आय शेष में अप्रैल-दिसंबर 2012 में स्थिति बिगड़ी क्योंकि निवल बहिर्वाह अप्रैल-दिसंबर 2011 के 11.4 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़ कर 16.8 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया.

- वर्ष के दौरान निवेश आय प्राप्तियों में पिछले वर्ष के मुकाबले 14.4 प्रतिशत की गिरावट आई जो विदेशी आरक्षित निधियों पर कम ब्याज/बट्टे की प्राप्ति को प्रतिबिंबित करती है. लेकिन, कर्मचारियों को निवल

क्षतिपूर्ति में पिछले वर्ष के 0.5 बिलियन अमरीकी डालर के अंतर्वाह के मुकाबले अप्रैल-दिसंबर 2012 में 0.7 बिलियन अमरीकी डालर का अंतर्वाह हुआ.

- समीक्षाधीन अवधि में निवेश आय भुगतान में 27.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई और ये 22.5 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गए. निवेश आय भुगतानों में हुई तीव्र वृद्धि मुख्यतः अनिवासी जमाराशियों, ईसीबी तथा अल्पकालीन व्यापारिक ऋणों सहित ऋणों पर ब्याज की अदायगी के कारण हुई. वर्ष के दौरान, उच्चतर ब्याज अदायगी का आंशिक कारण अनिवासी रुपया जमाराशियों पर ब्याज दर के अविनियमन, एफसीएनआर जमाराशियों की उच्चतम सीमा में वृद्धि तथा ईसीबी में वृद्धि होना था.

### गौण आय

- वर्ष के दौरान, मुख्यतः निजी अंतरणों वाली निवल गौण आय प्राप्तियों में 4.2 प्रतिशत की मामूली वृद्धि हुई और ये 48.5 बिलियन अमरीकी डालर (पिछले वर्ष 46.6 बिलियन अमरीकी डालर) हो गई.
- अनिवासी जमाराशियों का जब घरेलू तौर पर आहरण किया जाता है तो वे निजी अंतरण का भाग बन जाती हैं क्योंकि वे एकपक्षीय अंतरण हो जाता है तथा इनका कोई क्विड प्रतिकार नहीं होता. अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान अनिवासी जमाराशियों की कुल निकासी में स्थानीय आहरणों का हिस्सा 62.4 प्रतिशत था, जबकि पिछले वर्ष यह 65.1 प्रतिशत रहा था (सारणी 4).
- निजी अंतरणों में, अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान परिवार के रखरखाव के लिए आगम विप्रेषण कुल निजी

सारणी 4 : अनिवासी जमाराशियों के आगम/से निकासी तथा स्थानीय आहरण  
(बिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	आगम	निकासी	स्थानीय आहरण
1	2	3	4
2010-11 (आंसं)	49.3	46.0	26.2
2011-12 (आंसं)	64.3	52.4	32.5
अप्रैल-दिसंबर 2011 (आंसं)	43.3	36.0	23.5
अप्रैल-दिसंबर 2012 (प्रा)	49.9	37.8	23.6

प्रा : प्राथमिक. आंसं: आंशिक संशोधन.

## सारणी 5 : भारत को व्यक्तिगत अंतरण के ब्योरे

(बिलियन अमरीकी डालर)

वर्ष	कुल निजी अंतरण	जिनमें से:			
		परिवार के रखरखाव के लिए आगम विप्रेषण		अनिवासी जमाराशियों में से स्थानीय आहरण/मोचन	
		राशि	कुल में प्रतिशत हिस्सा	राशि	कुल में प्रतिशत हिस्सा
1	2	3	4	5	6
2010-11 (आंसं)	55.6	27.4	49.3	26.2	47.1
2011-12 (आंसं)	66.1	31.3	47.4	32.5	49.2
अप्रैल-दिसंबर 2011 (आंसं)	48.4	23.0	47.5	23.5	48.6
अप्रैल-दिसंबर 2012 (प्रा)	50.8	24.9	49.0	23.6	46.5

प्रा: प्राथमिक. आंसं: आंशिक संशोधित.

अंतरण प्राप्तियों का 49.0 प्रतिशत रहा जबकि स्थानीय आहरण 46.5 प्रतिशत के थे (सारणी 5).

## चालू खाता शेष

व्यापार घाटे की बिगड़ती स्थिति, आय (प्राथमिक और गौण दोनों को मिलाकर) में गिरावट के साथ निवल सेवाओं में सीमांत वृद्धि के कारण अप्रैल-दिसंबर 2012 में चालू खाता घाटा और बढ़ा. इस अवधि में चालू खाता घाटा 2011-12 की तदनुसूची अवधि के 56.5 बिलियन अमरीकी डालर की

तुलना में 71.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गया. जीडीपी के अनुपात के रूप में चालू खाता घाटा पिछले वर्ष की इसी अवधि के 4.1 प्रतिशत के मुकाबले अप्रैल-दिसंबर 2012 में 5.4 प्रतिशत पर पहुंच गया.

## पूंजीगत और वित्तीय खाता

## पूंजीगत खाता

- पूंजीगत खाते में अप्रैल-दिसंबर 2012 में 0.5 बिलियन अमरीकी डालर का घाटा दर्ज किया गया जबकि एक वर्ष पहले इसमें सीमांत अधिशेष रहा था.

## वित्तीय खाता

- भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में कमी होने के बावजूद वित्तीय खाते में निवल अंतर्वाह (आरक्षित आस्तियों में परिवर्तन को छोड़कर) बढ़ कर 71.9 बिलियन अमरीकी डालर हो गए जबकि पिछले वर्ष में ये 51.2 बिलियन अमरीकी डालर थे. यह वृद्धि मुख्य रूप से विदेशी संविभाग निवेशों, व्यापारिक ऋणों, अनिवासी जमाराशियों और ईसीबी में आगमों में सुधार के कारण हुआ.
- अप्रैल-दिसंबर 2012 में भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (विनिवेशों/ प्रत्यावर्तनों को छोड़कर) 21.1 बिलियन अमरीकी डालर के रहे जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के

## सारणी 6 : क्षेत्रवार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश : आगम और बहिर्गमन

(बिलियन अमरीकी डालर)

भारत को सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश#				भारत से सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश*			
उद्योग	2011-12	2011	2012	उद्योग	2011-12	2011	2012
		अप्रैल-दिसंबर				अप्रैल-दिसंबर	
1	2	3	4	5	6	7	8
विनिर्माण	9.3	8.0	4.8	कृषि, शिकार, वानिकी और फिशिंग	0.5	0.4	0.2
वित्तीय सेवाएं	2.6	2.4	2.2	वित्तीय, बीमा, भू-संपदा और व्यवसाय सेवाएं	3.3	2.4	2.5
संचार सेवाएं	1.5	1.5	0.1	विनिर्माण	3.2	2.6	2.5
व्यवसाय सेवाएं	1.6	1.3	0.5	परिवहन, भंडारण और दूरसंचार सेवाएं	1.9	1.2	1.3
बिजली तथा अन्य	1.4	1.0	1.0	थोक, खुदरा व्यापार, रेस्त्रां और हॉटल	1.2	0.9	0.6
निर्माण	2.6	1.7	1.0	निर्माण	0.5	0.4	0.5
रेस्त्रां और हॉटल	0.9	0.7	3.1	बिजली, गैस और पानी	0.05	0.03	0.1
कंप्यूटर सेवाएं	0.7	0.5	0.2	सामुदायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाएं	0.4	0.2	0.2
अन्य	2.9	2.1	1.0	विविध	0.1	0.1	0.04
<b>कुल</b>	<b>23.5</b>	<b>19.2</b>	<b>13.9</b>	<b>कुल</b>	<b>11.1</b>	<b>8.2</b>	<b>7.9</b>

#: इसमें एसआइए/एफआइपीबी तथा भारिबै के माध्यम से आने वाली प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ईक्विटी ही शामिल है, अतः यह अन्य सारणियों से तुलनीय नहीं है.

\*: इसमें ईक्विटी (व्यक्तिगत तथा बैंको की ईक्विटी को छोड़कर), ऋण और लागू की गई गारंटियां ही शामिल हैं, अतः ये अन्य सारणियों में दिए गए आंकड़ों से तुलनीय नहीं हैं.



- (28.7 बिलियन अमरीकी डालर)के मुकाबले कम थे। भारत को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में कमी ईक्विटी और ऋण प्रवाह दोनों में दर्ज हुई।
- उक्त अवधि में प्रत्यक्ष विदेशी निवेशों में क्षेत्रवार गिरावट मुख्यतः विनिर्माण, वित्तीय सेवाओं, व्यावसायिक सेवाओं तथा दूरसंचार सेवाओं के मामले में आयी (सारणी 6)। देशवार निवेशों में, मारीशस के रास्ते होने वाले निवेश सबसे बड़ा घटक बने रहे, उसके बाद सिंगापुर और नीदरलैंड का नम्बर आता है।
  - अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान भारत द्वारा निवल प्रत्यक्ष विदेशी निवेशों में 27.9 प्रतिशत की कमी आई और 5.8 बिलियन अमरीकी डालर (एक वर्ष पहले 8.0 प्रतिशत अमरीकी डालर) हो गए। ऐसा ईक्विटी निवेश तथा अन्य पूंजी (अंतर-कंपनी उधार)में कम आगम के साथ-साथ भारत द्वारा प्रत्यक्ष विदेशी निवेशों के उच्चतर प्रत्यावर्तनों के कारण हुआ। क्षेत्रवार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बहिर्गमन में कमी कृषि, शिकार, वानिकी तथा फिशिंग और परिवहन, भंडारण तथा संचार सेवाओं में दिखाई दी (सारणी 6)।

- उक्त अवधि में, दिशावार(अर्थात् प्राप्तकर्ता देशों के रूप में), मारीशस और सिंगापुर के रास्ते निवेश सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बहिर्गमन का सबसे बड़ा घटक बना रहा, उसके बाद यूएसए का नम्बर आता है (सारणी 7)।
- अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान ईक्विटी के माध्यम से वित्तपोषित प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बहिर्गमन में 8.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके विपरीत, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बहिर्गमन के ऋण घटक में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 15.8 प्रतिशत की गिरावट आई। तदनुसार, कुल बहिर्वाह प्रत्यक्ष विदेशी निवेशों में ईक्विटी का हिस्सा पिछले वर्ष के 47.1 प्रतिशत के मुकाबले बढ़ कर 53.4 प्रतिशत हो गया(सारणी 8)।
- अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान, निवल आधार पर, भारत में विदेशी संस्थागत निवेशों में तीव्र वृद्धि हुई और ये पिछले वर्ष के 2.7 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले 16.0 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गए।
- बैंकिंग क्षेत्र द्वारा करेंसी और जमाराशियों (अनिवासी भारतीय जमाराशियां) के अंतर्गत आगम में तेज वृद्धि हुई और यह एक वर्ष पहले के 7.3 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले बढ़ कर 12.0 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गए। अनिवासी भारतीय जमाराशियों में यह वृद्धि रुपये के कमजोर होने तथा ब्याज दर के अविनियमन के कारण हुई।
- गैर-सरकारी और गैर- बैंकिंग क्षेत्र द्वारा लिये गए निवल ऋण अप्रैल-दिसंबर 2011 के 6.9 बिलियन अमरीकी डालर से कम होकर 4.7 बिलियन अमरीकी

**सारणी 7 : देशवार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश : अंतर्वाह और बहिर्वाह**

(बिलियन अमरीकी डालर)

भारत में सकल एफडीआइ आगमन#				भारत से सकल एफडीआइ निर्गमन*			
देश	2011-12		देश	2011-12		अप्रैल-दिसंबर	
	2011	2012		2011	2012	2011	2012
1	2	3	4	5	6	7	8
मारीशस	8.1	6.9	6.3	नीदरलैंड	1.3	0.7	0.8
सिंगापुर	3.3	2.7	1.2	मारीशस	2.6	2.1	1.4
साइप्रस	1.6	1.0	0.3	सिंगापुर	2.2	1.8	1.4
नीदरलैंड	1.3	1.0	1.3	यूएसए	1.0	0.8	1.1
यूके	2.8	2.6	0.6	यूके	0.4	0.3	0.5
जापान	2.1	1.9	0.8	आस्ट्रेलिया	0.3	0.1	0.2
यूएसए	1.0	0.8	0.3	ब्रिटिश बर्जिन आइलैंड	0.6	0.5	0.5
यूएई	0.3	0.2	0.1	यूएई	0.4	0.4	0.6
दक्षिण कोरिया	0.2	0.1	0.2	अन्य	2.3	1.5	1.4
अन्य	2.8	2.0	2.8				
<b>कुल</b>	<b>23.5</b>	<b>19.2</b>	<b>13.9</b>	<b>कुल</b>	<b>11.1</b>	<b>8.2</b>	<b>7.9</b>

# : इसमें एसआइए/एफआइपीबी तथा भारिबैं के माध्यम से ईक्विटी एफडीआइ शामिल है, अतः इनका अन्य सारणियों के आंकड़ों से मेल नहीं है।

\* : इसमें ईक्विटी (व्यक्तियों और बैंकों को छोड़कर), ऋण तथा मांगी गई गारंटियां शामिल हैं, अतः अन्य सारणियों में दिए गए आंकड़ों से मेल नहीं खाते

**सारणी 8 : भारत से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बहिर्गमन**

(बिलियन अमरीकी डालर)

अवधि	ईक्विटी*	ऋण	लागू की गई गारंटियां	कुल
अप्रैल-दिसंबर 2012	4.2 (53.4)	3.7 (46.2)	0.03 (0.3)	7.9
अप्रैल-दिसंबर 2011	3.9 (47.1)	4.4 (52.9)	0.0 (0.0)	8.3
2011-12	5.4 (48.8)	5.7 (51.2)	0.0 (0.0)	11.1
2010-11	9.3 (55.1)	7.6 (44.6)	0.1 (0.3)	17.0

\* : इसमें व्यक्तियों और बैंकों की ईक्विटी शामिल नहीं है

**टिप्पणी :** कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े उक्त अवधि में कुल एफडीआइ बहिर्गमन में प्रतिशत हिस्से को दर्शाते हैं।

सारणी 9 : अन्य प्राप्य/देय राशियों के ब्योरे (निवल)

(बिलियन अमरीकी डालर)

मद	अप्रैल-मार्च (आंस)		अप्रैल-दिसंबर	
	2010-11	2011-12	2011-12 (आंस)	2012-13 (प्रा)
1	2	3	4	5
निर्यातों में घट-बढ़	-8.8	-10.4	-6.9	-4.4
विदेश में धारित निवल निधियां	-5.5	-2.8	-1.9	-3.1
एफडीआइ के अंतर्गत शेयरों के लंबित निर्गमों के प्राप्त अग्रिम	6.9	2.7	3.6	6.4
एसडीआर आबंटन	0	0	0	0
अन्य कहीं शामिल न की गई अन्य पूंजी#	-5.3	3.6	1.6	2.3
<b>कुल</b>	<b>-12.7</b>	<b>-6.9</b>	<b>-3.6</b>	<b>1.2</b>

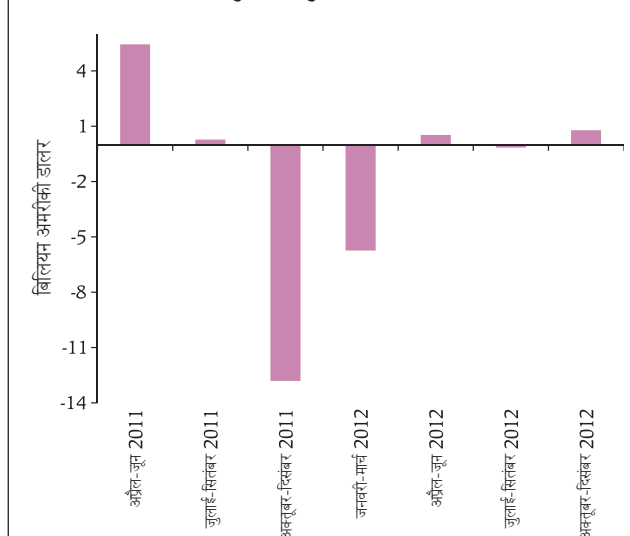
#: इसमें व्युत्पन्न तथा बचाव व्यवस्था, प्रवासी अंतरण तथा अन्य पूंजीगत अंतरण शामिल हैं  
प्रा: प्राथमिक. आंस: आंशिक संशोधित. सं: संशोधित. -: कुछ नहीं/अनुपलब्ध.

डालर रह गए. इसका कारण 2012-13 की पहली और दूसरी तिमाही के दौरान कम नए वितरण तथा ईसीबी के बड़े भुगतान होना था. उक्त अवधि में अल्पकालीन व्यापार ऋणों के अंतर्गत निवल आगम पिछले वर्ष के 6.7 बिलियन अमरीकी डालर के मुकाबले बढ़ कर 15.7 बिलियन अमरीकी डालर हो गए.

- अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान बैंकों द्वारा लिये गए निवल ऋण पिछले वर्ष के 6.7 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़ कर 7.6 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गए. अन्य प्राप्य/देय राशियों में, जिनमें निर्यातों में घट-बढ़, एसडीआर आबंटन, विदेश में धारित निवल निधियां, एफडीआइ के अंतर्गत शेयरों के लंबित निर्गमों के प्राप्त अग्रिम, रुपया ऋण चुकौती तथा अन्य कहीं न शामिल की गई अन्य पूंजी शामिल है, अप्रैल-दिसंबर 2012 में 1.2 बिलियन अमरीकी डालर के निवल आगम हुए, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 3.6 बिलियन अमरीकी डालर का निवल बहिर्गमन हुआ था (सारणी 9). निर्यातों में घट-बढ़ में अनिवासियों को भारतीय निर्यातकों द्वारा दिए गए व्यापार ऋण भी शामिल हैं.

### आरक्षित निधियों में घट-बढ़

- अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों में 1.1 बिलियन अमरीकी डालर की अल्प वृद्धि हुई (चार्ट 4). सांकेतिक रूप में (अर्थात् मूल्यांकन

चार्ट 4 : भारत की आरक्षित विदेशी मुद्रा निधियों में घट-बढ़  
(भुगतान संतुलन आधार पर)

परिवर्तनों सहित) विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियों में 1.2 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय करेंसियों के विरुद्ध यूएस डालर में अवमूल्यन को प्रतिबिंबित करती है. दिसंबर 2012 के अंत में विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियां 295.6 बिलियन अमरीकी डालर की थीं.

### डीजीसीआइ एंड एस तथा भुगतान संतुलन के बीच अंतर

#### आयात

- डीजीसीआइ एंड एस (सीमा शुल्क के आंकड़े) तथा भुगतान संतुलन (बैंकिंग माध्यम के आंकड़े) पर आधारित आयात संबंधी आंकड़े सारणी 10 में दिये गये हैं. बाद में संशोधन होने पर इन दोनों के आंकड़ों के घटने की संभावना है.

सारणी 10 : डीजीसीआइ एंड एस तथा भुगतान संतुलन आयात संबंधी आंकड़े

(बिलियन अमरीकी डालर)

	अप्रैल-मार्च		अप्रैल- दिसंबर 2011-12	अप्रैल- दिसंबर 2012-13
	2010-11	2011-12		
1. भुगतान संतुलन आयात	383.5	499.5	367.8	368.7
2. डीजीसीआइ एंडएस आयात	369.8	489.3	363.9	363.3
3. अंतर (1-2)	13.7	10.2	3.9	5.4